क़ुरआनी और मसनून दुआऐं

Qur`anic and Masnoon Supplications

डॉ. फ़रहत हाश्मी

Dr.Farhat Hashmi

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

Book title: Qur`anic and Masnoon Supplications

Compiled by : Dr.Farhat Hashmi

Published by : Al-Huda Publication Islamabad

Edition : Tenth

Price :

ISBN :

Date of Publication :

Available At:

Islamabad: 7A.K. Brohi Road, H-11/4, Islamabad, Pakistan

Ph#: +92-51-4434615 +92-51-4436140-3

salesoffice@alhudapk.com www.alhudapk.com ,www.farhathashmi.com

Karachi: 30-A Sindhi Muslim Co operative Housing Society,

Sales Office : Karachi, Pakistan

Ph#:+92-21-34528547,+92-21-34528548

Canada: 5671, McAdam Rd, Mississauga Canada

Ph#(905)624-2030 , (647)869-6679

www.alhudainstitute.ca

USA: P.O Box 2256,Keller, TX762 44

Ph(817) -285-945 (480) -234-8918

alhudaonlinebooksmail.com

INDIA: P.O.BOX 444, Basavangudi, Bengaluru-560004.India

Ph:+91-80-41139106 1 +91-9535612224

alhuda.india@gmail.com

भूमिका

अलहम्दुलिल्लाह! अल्लाह की ख़ास रहमत और इनायत से किताब "क़ुरआनी और मसनून दुआऐं" एक बार फ़िर नए इज़ाफ़ो के साथ आप के सामने पेश की जा रही है।

इस एडिशन में दुआओं को तरतीब देते हुए "رَبِّ"और " رَبَّنَا" के उनवानात के तहत दो बड़े हिस्सों में तक़सीम किया गया है और इसके अलावा दुआओं को अलग जमा कर दिया गया है। इसी तरह पढ़ने वालों की आसानी के लिए छोटी दुआओं को पहले और लम्बी दुआओं को बाद में रखा गया है और यह भी कोशिश कि गई है की हम-मानी दुआओं को एक जगह कर दिया जाए।

उम्मीद है कि दुआओं का यह मजमुआ हर मौक़े और मुक़ाम पर आप का साथी रहेगा खुसुसन क़ुबूलियत के औक़ात में ताकि कुछ माँगने से रह ना जाए!

इन दुआओं के ज़रिए अपने रब को पुकारें आप ज़रूर कह उठेंगें:

وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا(مريم :४)

" ऐ मेरे रब! तुझ से दुआ माँग कर मैं कभी मेहरूम नहीँ रहा "

अल्लाह तआला इस कोशिश को क़ुबूल करे-- आमीन

फ़रहत हाश्मी

जुमादा अल-अव्वल १४३६ ह, मार्च २०१५.

FOREWORD

Alhamdulillah! With Allah's blessings and mercy the book, "Qur'anic and Masnoon Suplications" is being presented once again with some new additions.

In this edition,the suplications from the Qur'an are categorized under the heading of *"Rabbi"* and "*Rabbana"* ,while others,have been compiled under a different heading.For the convenience of the reader,brief ones have been placed before longer suplications and those with similar meanings are placed together. The English translation of the Qur'anic Suplications has been taken from "The Qur'an" revised and edited by Saheeh International (*Riyadh*).

Hope this collection of suplications would beyour companion at every event and place, especially in the moments of 'acceptance of dua' so that nothing would be left from asking.

Invoke your Rabb by these suplications and you too will definitely say:

وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَآءِكَ رَبِّ شَقِيًّا(مريم :4)

And never have I been in my supplication to You, my Lord, unhappy

May Allah the Exalted accept this attempt -- Ameen

Farhat hashmi
Jumada Al-Awwal 1436, March 2015

दुआ की फ़ज़ीलत और एहमियत

इंसान की पैदाइश का मक़सद अल्लाह ﷻ की इबादत करना है -अल्लाह ﷻ का फरमान है:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ (الذاريات: 56)

"मैं ने जिन्नो और इंसानों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिए पैदा किया"

अल्लाह ﷻ से दुआ करना भी इबादत है - जैसा के रसूलअल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةِ (سنن أبي داؤد)

"दुआ ही इबादत है"

फरमान-ए- इलाही है:

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ (البقرة: 186)

"जब मेरे बन्दे मेरे बारे में आप से पूछें तो (कह दें) मैं क़रीब हूँ, हर पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब वह मुझे पुकारे-"

दुआ मांगने के आदाब:

- इख्लास-ए- नीयत और पूरी तवज्जुह के साथ दुआ करना
- अल्लाह की हम्द -ओ-सना से शुरू करना
- दुआ के शुरू और आख़िर में दरूद पढ़ना
- क़ुबूलियत के यक़ीन के साथ दुआ माँगना
- अल्लाह के सिवा किसी और से ना माँगना
- पहले अपने लिए फिर दूसरों के लिए दुआ करना
- अल्लाह ता'आला से अपने गुनाहों की बख़शिश तलब करना
- नेअमतों पर अल्लाह का शुक्र करना

दुआ की क़ुबूलियत के औक़ात:

- अज़ान और इक़ामत के दरमियान
- शबे क़दर में
- तहज्जुद के समय
- क़ुरआन मजीद की तिलावत के बाद
- फ़र्ज़ नमाज़ के बाद
- सफ़र में
- जुमा के दिन की एक घडी में
- अरफ़ात के दिन
- सज्दे में
- आबे ज़म ज़म पीते समय
- सेहरी के समय
- मैदाने जंग मे
- रोज़े की हालत में
- बारिश बरसते समय

The Merits and Importance of Supplication

The purpose of man's creation is to worship Allah ﷻ as He says:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ (الذاريات: 56)

"And I created not the Jinn and mankind except that they should worship Me."

To supplicate to Allah ﷻ is also a form of worship. As the Prophet ﷺ stated:

اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةِ (سنن أبي داؤد)

"Supplication is the Worship"

Allah ﷻ says: وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ (البقرة: 186)

"And when My servants ask you about Me, indeed I am near, I respond to the supplication of the supplicant when he supplicates to Me."

The Etiquettes of Supplicating

- Supplicate with sincerity and concentration.
- Begin supplication with praise and glorification of Allah ﷻ.
- Send *darood* at the beginning and end of *dua*.
- Supplicate with certainty of acceptance.
- Pay gratitude to Allah ﷻ while acknowledging His blessings.
- Do not supplicate to anyone other than Allah ﷻ.
- Supplicate for oneself first and then for others.
- Seek forgiveness from Allah ﷻ while acknowledging sins.

The Time of Acceptance of Supplication

- Between the *Azaan* and *Iqamah.*
- At the time of *Tahajjud.*
- At the end of obligatory prayer.
- A specific time on Friday.
- During prostration.
- At the time of pre-dawn meal *(sehri).*
- During fasting
- The Night of Power & Destiny.
- After recitation of the *Quran.*
- While travelling.
- On the day of *Arafah.*
- While drinking *Zamzam* water.
- In the battlefield.
- While it is raining.

हम्द-ओ-सना

Praise & Glory

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ[1]

"पाक है अल्लाह ﷻ और उसी की तारीफ़ है, पाक है अल्लाह बहुत बड़ा"

"Glory be to Allahﷻ and praise be to Him, Glory be to Allah, the Supreme."

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ بِحَمْدِهِ عَدَدَ خَلْقِهِ وَ رِضَا نَفْسِهِ وَ زِنَةَ عَرْشِهِ وَ مِدَادَ كَلِمَاتِهِ[2]

'पाक है अल्लाहﷻ और उसी की तारीफ़ है उसकी मखलूक़ की गिनती के बराबर, उसकी ज़ात की रज़ा के बराबर, उसके अर्श के वज़न और उसके कालिमात की सियाही के बराबर।'

"Glory be to Allah and praise be to Him equivalent to the number of His creation and equivalent to what pleases His Being and equivalent to the weight of His Throne and equivalent to the ink of His Words."

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِاَنَّ لَكَ الْحَمْدَ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الْمَنَّانُ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الاَرْضِ، يَاذَاالْجَلَا لِ وَ الاِكْرَامِ يَاحَىُّ يَاقَيُّوْمُ[3]

'ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से सवाल करता हूँ बवजह इसके की सब तारीफ़ तेरे लिए है, तेरे सिवाय कोई म'अबूद नहीं है, बहुत एहसान करने वाला, आसमानों और ज़मीन को नये सिरे से पैदा करने वाला, ए बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले, ए हमेशा ज़िंदा रहने वाले, और ए हमेशा क़ायम रहने वाले।'

"O Allah! I ask of You, as all praise is for You, there is no deity except You, the Most Gracious, Originator of the Heavens and the Earth, O the Most Majestic and Honorable, O The Eternal and Self Subsisting."

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِاَنِّىْ اُشْهِدُكَ اَنَّكَ اَنْتَ اللّٰهُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ الاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِىْ لَمْ يَلِدْ وَ لَمْ يُوْلَدْ وَ لَمْ يَكُنْ لَهٗ كُفُوًا اَحَدٌ[4]

"ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से सवाल करता हूँ, बेशक मैं तुझ को गवाह बनता हूँ (इस बात पर) की तेरे सिवा कोई म'अबूद नहीं, अकेला है, बेनीयाज़ है, वह जिससे न कोई पैदा हुआ और न वह किसीसे पैदा हुआ और न तेरे लिए कोई हमसर है"

"O Allah, Indeed I ask You, as I bear witness that there is no deity except You, The One, The Eternal Refuge, He is One who neither begets nor is born, Nor is there to You any equivalent."

दरूद शरीफ़

Peace & Blessings upon Prophetﷺ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ[1]

''ए अल्लाह! मुहम्मदﷺपर और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा''!

"O Allah! Bestow mercy upon Muhammadﷺ and the descendants of Muhammadﷺ."

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ[2]

''ए अल्लाह! नबी-ए-उम्मी मुहम्मदﷺ पर और उनकी आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा''!

"O Allah! Bestow mercy upon Muhammadﷺ, the unlettered messenger and upon the family of Muhammadﷺ."

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ
مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ[3]

''ए अल्लाह! अपने बन्दे और रसूल मुहम्मद ﷺ पर इसी तरह रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तू ने इबराहीमعليه السلامपर रहमत नाज़िल फ़रमाई और मुहम्मदﷺपर और आल-ए-मुहम्मद ﷺ पर इसी तरह बरकत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तू ने बरकत नाज़िल फ़रमाई इबराहीमعليه السلام और आल-ए-इब्राहिम عليه السلام पर ।"

"O Allah! Send mercy upon Your servant and messenger, Muhammadﷺ, as You sent mercy upon Ibrahim (as), and send blessings on Muhammadﷺ and on the family of Muhammadﷺ, as You sent blessings on Ibrahim (as) and the family of Ibrahim (as)."

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ،
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ[4]

''ए अल्लाह! मुहम्मदﷺऔर आल-ए-मुहम्मदﷺपर इसी तरह रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तूने रहमत नाज़िल फ़रमाई इबराहीमعليه السلامपर और आल-ए-इब्राहिमعليه السلامपर, बेशक तू ही तारीफ़ और बुज़ूर्गी वाला है, ए अल्लाह! मुहम्मदﷺऔर आल-ए-मुहम्मदﷺ पर इसी तरह बरकत नाज़िल फ़रमा जिस तरह तू ने बरकत नाज़िल फ़रमाई इबराहीमعليه السلام पर और आल-ए-इबराहीमعليه السلامपर, बेशक तू ही तारीफ़ और बुज़ुर्गी वाला है"

"O Allah! Send prayers upon Muhammadﷺ and the followers of Muhammadﷺ, just as You sent prayers upon Ibrahimعليه السلام, and upon the followers of Ibrahimعليه السلام. Verily, You are full of Praise and Majesty. O Allah, send blessings upon Muhammadﷺ, and upon the family of Muhammadﷺ, just as You sent blessings upon Ibrahimعليه السلام, and upon the family of Ibrahimعليه السلام. Verily, You are the Most Praiseworthy, the Most Glorious."

قُرآني دعائين

1.رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ وَ يَسِّرْلِيْٓ اَمْرِيْ ۙ
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۙ يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۙ

2.رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۙ

3.رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۙ

4.رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ۙ

5.رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ فَرْدًا وَّ اَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۙ

6.رَبِّ اغْفِرْ وَ ارْحَمْ وَ اَنْتَ خَيْرُالرّٰحِمِيْنَ ۙ

7.رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًافِىالْجَنَّةِ ۙ

8.رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّ اَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ
مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۙ

क़ुरआनी दुआऐं

(Qur`anic Supplications)

१. ए मेरे रब! मेरा सीना खोल दे। मेरा काम आसान कर दे और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे ताकि वह मेरी बात समझ सकें।

1 .O My Lord, expand for me my chest. And make easy for me my task. And untie the knot from my tongue; that they may understand my speech.

२. ए मेरे रब! मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा।

2. My Lord, increase me in knowledge.

३. ए मेरे रब! इन दोनों (माँ-बाप) पर रहम फ़रमा जिस तरह उन्होंने मुझे बचपन में पाला था।

3. My Lord, have mercy upon them (my parents), as they brought me up (when I was) small.

४. ए मेरे रब! जो भी ख़ैर तू मुझ पर नाज़िल फ़रमाए मैं उसका मोहताज हूँ।

4. My lord, Indeed I am in absolute need of the good You send me.

५. ए मेरे रब! मुझे अकेला (बे औलाद) ना छोड़ और तू ही बेहतरीन वारिस है।

5. My Lord, do not leave me alone (with no heir), and You are the Best of the Inheritors.

६.ए मेरे रब! बख़्श दे और रहम फ़रमा और तू रहम करने वालों में बेहतरीन है।

6. My Lord, forgive and have mercy, and You are the Best of the Merciful.

७. ए मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बनादे।

7. My Lord, build for me near You, a house in Paradise.

८. ए मेरे रब! तू मुझे दाख़िल कर सच्चाई के साथ दाख़िल होने की जगह (पर) और मुझे निकाल सच्चाई के साथ निकालने की जगह (से) और अपनी तरफ से एक क़ुव्वत को मेरा मददगार बना दे।

8. O My Lord, cause me to enter a sound entrance and to exit a sound exit and grant me from Yourself, a supporting authority.

9.رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَکًا وَّ اَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ۝

10.رَبِّ انْصُرْنِیْ عَلَی الْقَوْمِ الْمُفْسِدِیْنَ۝

11.رَبِّ اَعُوْذُبِکَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّیٰطِیْنِ۝وَ اَعُوْذُبِکَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ۝

12.رَبِّ اِنِّیْٓ اَعُوْذُبِکَ اَنْ اَسْئَلَکَ مَا لَیْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ وَ اِلَّا تَغْفِرْلِیْ وَ تَرْحَمْنِیْٓ اَکُنْ مِّنَ الْخٰسِرِیْنَ۝

13.رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۖ رَبَّنَا وَ تَقَبَّلْ دُعَآءِ۝رَبَّنَا اغْفِرْلِیْ وَ لِوَالِدَیَّ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ۝

14رَبِّ هَبْلِیْ حُکْمًاوَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ۝وَ اجْعَلْ لِّیْ لِسَانَ صِدْقٍ فِیْ الْاٰخِرِیْنَ وَ اجْعَلْنِیْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِیْمِ۝وَ لَا تُخْزِنِیْ یَوْمَ یُبْعَثُوْنَ۝

15.رَبِّ اَوْزِعْنِیْٓ اَنْ اَشْکُرَنِعْمَتَکَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰی وَالِدَیَّ وَ اَنْ اَعْمَلَ صٰلِحًا تَرْضٰهُ وَ اَدْخِلْنِیْ بِرَحْمَتِکَ فِیْ عِبَادِکَ الصّٰلِحِیْنَ۝

९. ए मेरे रब! मुझे बरकत वाली जगह उतार और तू बेहतरीन उतारने वालों में से है।

9. My Lord, let me land at a blessed landing place, and You are the Best to accommodate (us).

१०.ए मेरे रब! फ़साद करने वाली क़ौम के मुक़ाबले में मेरी मदद फ़रमा।

10. My Lord, support me against the corrupting people.

११.ए मेरे रब! मैं शयातीन की उकसाहटों से तेरी पनाह माँगता हूँ और मैं तेरी पनाह माँगता हूँ ए मेरे रब! के वह मेरे पास आऐं।

11. My Lord, I seek refuge in You, from the incitements of the devils. And I seek refuge in You, my Lord, lest they be present with me.

१२. ए मेरे रब! मैं तेरी पनाह मांगता हूँ उससे की वह चीज़ तुझ से मांगूं जिसका मुझे इल्म नहीं और अगर तू ने मुझे माफ़ न किया और मुझ पर रहम न फ़रमाया तो मैं नुकसान पाने वालों में से हो जाऊँगा।

12. My Lord, I seek refuge in You from asking that of which I have no knowledge. And unless You forgive me and have mercy upon me, I will be among the losers.

१३. ए मेरे रब! मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना, ए हमारे रब! और मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा। ए हमारे रब! मुझे और मेरे माँ-बाप और सब ईमान वालों को उस दिन बख़्श देना जब हिसाब क़ायम होगा।

13. My Lord, make me an establisher of prayer, and (many) from my descendants. Our Lord, and accept my supplication. Our Lord, forgive me and my parents and the believers, the Day the account is established.

१४. ए मेरे रब! मुझे क़ुव्वत-ए-फ़ैसला अता फ़रमा और मुझे नेक लोगों से मिला दे और बाद में आने वालों में मेरी सच्ची नामवरी बाक़ी रख और मुझे नेअमतों भरी जन्नत के वारिसों में से बना दे, और मुझे रुसवा ना करना, जिस दिन वह (लोग) उठाए जाऐंगे !

14. My Lord, grant me authority and join me with the righteous. And grant me a reputation of honor among later generations. And place me among the inheritors of the Garden of Pleasure….. And do not disgrace me, the Day they (all) are resurrected.

९५.ए मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे की मैं तेरी उस नेअमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर उतारी और यह की ऐसा नेक अमल करूँ जिससे तू राज़ी हो जाए, और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दो में दाख़िल कर।

15. My Lord, enable me to be grateful for Your favor, which You have bestowed upon me and upon my parents and to do righteous (deeds) that will please you. And admit me by Your mercy into (the ranks of) Your righteous servants.

16.رَبِّ اَوْزِعْنِیْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِیْۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَعَلٰى وَالِدَیَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْكَ وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۝

****

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِیْلًا (المزمل:۹)

****

१६. ए मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे की मैं तेरी उस नेअमत का शुक्र अदा करूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर उतारी और यह की ऐसा नेक अमल करूँ जिससे तू राज़ी हो जाए, और मेरे लिए मेरी औलाद की इस्लाह फरमा दे, बेशक मैने तेरी तरफ़ तौबा की और बेशक मैं मुसलमानों में से हूँ।

16. My Lord, enable me to be grateful for Your favor, which You have bestowed upon me and upon my parents and to righteous (deeds) that will please you and make righteous for me my offspring. Indeed, I have repented to You, and indeed, I am of the Muslims.

****

"रब है मशरिक़ और मग़रिब का उसके सिवा कोई मअबूद नहीं पस उसी को मददगार बना लिजिए"

"The Lord of the East and the West; there is no deity except Him so take Him as Disposer of (your) affairs."

****

قُرآني دعاَئين

Qur`anic Supplications

1. رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِیْ الاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ۝

2. رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةًوَّهَیِّئْ لَنَامِنْ اَمْرِنَارَشَدًا۝

3. رَبَّنَآ عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَاوَاِلَیْكَ اَنَبْنَا وَ اِلَیْكَ الْمَصِیْرُ۝

4. رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِیْنَ۝

5. رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَ اغْفِرْلَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ۝

6. رَبَّنَاهَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَاوَذُرِّیّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا۝

क़ुरआनी दुआऐं

Quranic Supplications

१. ए हमारे रब! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आख़िरत में भी भलाई दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

1. Our Lord, give us in this world (that which is) good and in the Hereafter (that which is) good and protect us from the punishment of the Fire.

२. ए हमारे रब! हमें अपनी तरफ़ से रहमत अता कर और हमारे लिए हमारे मामले में भलाई अता फ़रमा ।

2. Our Lord, grant us from Yourself mercy and prepare for us from our affair right guidance.

३. ए हमारे रब! तुझ पर हम ने भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम ने रुजूअ किया और तेरी ही तरफ़ लौटना है।

3. Our Lord, upon You we have relied, and to You we have returned, and to You is the destination.

४. ए हमारे रब! हम इमान लाए उस पर जो तू ने नाज़िल किया, और हम ने रसूल की पैरवी की, पस हमें गवाही देने वालों में लिख ले।

4. Our Lord, we have believed in what You revealed and have followed the messenger (Jesus as), so register us among the witnesses (to truth).

५. ए हमारे रब! हमारा नूर हमारे लिए मुकम्मल कर दे और हमारी बख़्शीश फ़रमा, बेशक तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।

5. Our Lord, perfect for us our light and forgive us. Indeed, You are over all things competent.

६.ए हमारे रब! हमें अपनी बीवियों और औलाद में से आँखों की ठंडक अता फ़रमा और हमें नेकोकारों का इमाम बना।

6. Our Lord, grant us from among our wives and offspring comfort to our eyes and make us an example for the righteous.

7.رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ تَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ۝

8.رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّ ثَبِّتْاَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ۝

9.رَبَّنَالَا تَجْعَلْنَافِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ۝ وَنَجِّنَابِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ۝

10.رَبَّنَالَا تُزِغْ قُلُوْبِنَابَعْدَاِذْ هَدَيْتَنَا وَ هَبْ لَنَامِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚاِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ۝

11.رَبَّنَآاِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ۝

12.رَبَّنَاظَلَمْنَآاَنْفُسَنَاوَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَاوَتَرْحَمْنَالَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ۝

13.رَبَّنَااغْفِرْلَنَاذُنُوْبَنَاوَاِسْرَافَنَافِيْٓ اَمْرِنَاوَثَبِّتْ اَقْدَامَنَاوَانْصُرْنَاعَلَى الْقَوْمِالْكٰفِرِيْنَ۝

७. ए हमारे रब! हम पर सब्र उंड़ेल दे और हमें मुसलमान फ़ौत करना।

7. Our Lord, pour upon us patience and let us die as Muslims (in submission to You).

८. ए हमारे रब! हम पर सब्र उंड़ेल दे और हमारे क़दम जमा दे और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।

8. Our Lord, pour upon us patience and plant firmly our feet and give us victory over the disbelieving people.

९. ए हमारे रब! हमें ज़ालिम लोगों के लिए फ़ित्ना न बना। और अपनी रहमत से हमें काफ़िर क़ौम से निजात दे।

9. Our Lord, make us not (objects of) trial for the wrongdoing people. And save us by Your mercy from the disbelieving people.

१०. ए हमारे रब! जब तू ने हमें हिदायत दे दी है तो हमारे दिलो को टेढ़ा ना कर और हमें अपनी तरफ़ से रह्मत अता कर, बेशक तू बहुत ज़्यादा अता करने वाला है।

10. Our Lord, let not our hearts deviate after You have guided us and grant us from Yourself mercy. Indeed, You are the Bestower.

११. ए हमारे रब! बेशक हम ईमान लाए ,पस हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ले।

11. Our Lord, indeed we have believed, so forgive us our sins and protect us from the punishment of the Fire.

१२. ए हमारे रब! हमने अपने ऊपर ज़ुल्म किया और अगर तूने हमें माफ़ न किया और हम पर रहम न किया तो बेशक हम नुक़्सान पाने वालों में से हो जाऐंगे ।

12. Our Lord, we have wronged ourselves, and if You do not forgive us and have mercy upon us, we will surely be among the losers.

१३. ए हमारे रब! हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारे मामले में हद से बढ़ना भी, और हमारे क़दम जमा दे और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।

13. Our Lord, forgive us our sins and the excess (committed) in our affairs and plant firmly our feet and give us victory over the disbelieving people.

14.رَبَّنَااغْفِرْلَنَاوَلِاِخْوَانِنَاالَّذِيْنَ سَبَقُوْنَابِالْاِيْمَانِ وَلَاتَجْعَلْ فِىْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ۝

15.رَبَّنَآاِنَّنَاسَمِعْنَامُنَادِيًايُّنَادِىْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْابِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۟رَبَّنَافَاغْفِرْلَنَاذُنُوْبَنَاوَكَفِّرْ عَنَّاسَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَامَعَ الْاَبْرَارِ۝

16.رَبَّنَاوَاٰتِنَامَاوَعَدْتَّنَاعَلٰى رُسُلِكَ وَلَاتُخْزِنَايَوْمَ الْقِيٰمَةِاِنَّكَ لَاتُخْلِفُ الْمِيْعَادَ۝

17.رَبَّنَااصْرِفْ عَنَّاعَذَابَ جَهَنَّمَ ۖاِنَّ عَذَابَهَاكَانَ غَرَامًا۝اِنَّهَاسَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا۝

18.رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ۝

१४. ए हमारे रब! हमें और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए हैं बख़्श दे और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कोई बुगज़ न रख, ए हमारे रब! बेशक तू बहुत शफक़त करने वाला रहीम है।

14. Our Lord, forgive us and our brothers who preceded us in faith and put not in our hearts (any) resentment towards those who have believed. Our Lord, indeed You are Kind and Merciful.

१५. ए हमारे रब! बेशक हम ने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान के लिए पुकार रहा था के अपने रब पर ईमान ले आओ, तो हम ईमान ले आए । ए हमारे रब! पस हमारे गुनाहों को अन्देखा कर दे और हमारी बुराईयां हम से दूर कर दे, और हमें नेक लोगों के साथ मौत देना ।

15. Our Lord, indeed we have heard a caller calling towards faith, (saying), 'Believe in your Lord,' and we have believed. Our Lord, so forgive us our sins and remove from us our misdeeds and cause us to die with the righteous.

१६. ए हमारे रब! और हमें दे जिस का वादा तू ने अपने रसूलों के ज़रिए किया और हमें क़यामत के दिन रुसवा ना करना, बेशक तू अपने वादे के खिलाफ़ नहीं करता ।

16. Our Lord, and grant us what You promised us through Your messengers and do not disgrace us on the Day of Resurrection. Indeed, You do not fail in (Your) promise.

१७. ए हमारे रब! जहन्नुम के अज़ाब को हम से फेर ले, बेशक उसका अज़ाब तो जान को लागु है। बेशक वह बहुत बुरा ठिकाना और मुक़ाम है।

17. Our Lord, avert from us the punishment of Hell. Indeed, its punishment is ever adhering. Indeed, it is evil as a settlement and residence.

१८. ए हमारे रब! तू ने यह (ज़मीन और आसमान) बेमक़सद पैदा नहीं किया, तू पाक है पस हमें आग के अज़ाब से बचाले। ए हमारे रब! बेशक जिसे तू ने आग में दाखिल किया तो यक़ीनन तू ने उसे रुसवा कर दिया और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं है ।

18. Our Lord, You did not create this aimlessly; Exalted are You (above such a thing); so protect us from the punishment of the Fire. Our Lord, indeed whoever You admit to the Fire – You have disgraced him, and for the wrongdoers there are no helpers.

19.رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝ رَبَّنَا وَ اَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ اَزْوَاجِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ۝

20.رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚرَبَّنَا وَلَاتَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَاحَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚرَبَّنَا وَلَاتُحَمِّلْنَا مَالَاطَاقَةَ لَنَابِهٖ ۖوَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَآ ۚ اَنْتَ مَوْلَانَافَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ۝

****

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّآ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ(البقرة:۱۲۷)

****

१९. ए हमारे रब! तू ने हर चीज़ को अपनी रह्मत और इल्म से घेर रखा है।पस तू बख़्श दे उन्हें जो तौबा करें और तेरी राह की पैरवी करें और उन्हें जहन्नुम के अज़ाब से बचाले । ए हमारे रब! और उन्हें हमेशा रहने वाली जन्नतों में दाखिल कर जिनका तू ने उन से वादा किया है और उनके बाप, दादा और बीवियों और औलादों में से भी उन सब को जो नेक हों, बेशक तू ग़ालिब और हिकमत वाला है।

19. Our Lord, You have encompassed all things in mercy and knowledge, so forgive those who have repented and followed Your way and protect them from the punishment of the Hellfire. Our Lord, and admit them to gardens of perpetual residence which You have promised them and (those) who was righteous among their fathers, their spouses and their offspring. Indeed, it is You who is the Exalted in Might, the Wise.

२०. ए हमारे रब! हमारी पकड़ न करना अगर हम भूल जाऐं या हम ग़ल्ती कर लें, और ए हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जो तू ने हम से पह्ले लोगों पर डाला था, ए हमारे रब! हम पर वह बोझ न डाल जिसे उठाने की हम में ताक़त नहीं और हमें माफ़ कर दे और हमें बख़्श दे और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मौला है, पस काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद फ़रमा।

20. Our Lord, do not impose blame upon us if we have forgotten or erred. Our Lord, and lay not upon us a burden like that which You laid upon those before us. Our Lord, and burden us not with that which we have no ability to bear. And pardon us; and forgive us; and have mercy upon us. You are our Protector, so give us victory over the disbelieving people.

****

"ए हमारे रब! हमसे क़ुबूल फ़रमा,
बेशक तू सब सुनने वाला, जानने वाला है"

"O Our Lord, accept (this) from us. Indeed, You are the All Hearing, the All Knowing."

****

متفرق دعائین

Miscellaneous Supplications

1.اَعُوْذُبِاللّٰهِ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ۝

2.اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّیْ وَ حُزْنِیْٓ اِلَى اللّٰهِ۝

3.اَنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ۝

4.لَآاِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ اِنِّیْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ۝

5.حَسْبِیَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَ هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ۝

6.فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَ الاَرْضِ اَنْتَ وَلِیّٖ فِی الدُّنْيَا وَ الاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِيْنَ۝

7.اَللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِی الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُوَتُعِزُّمَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ۝تُوْلِجُ الَّيْلَ فِی النَّهَارِ وَ تُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّيْلِ وَ تُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَیِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِحِسَابٍ۝

मुतफर्रिक़ दुआएं (Miscellaneous Supplications)

१. मैं अल्लाह कि पनाह चाहता हूँ की मैं जाहिलों मे से हो जाऊँ ।

1. I seek refuge in Allah from being among the ignorant.

२. बेशक मैं अपनी बेक़रारी और अपने ग़म का शिकवा अल्लाह से करता हूँ ।

2. I only complain of my suffering and my grief to Allah.

३. (ए रब!) बेशक मुझे तकलीफ़ पहुँची है और तू रहम करने वालों में सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।

3. Indeed, adversity has touched me, and you are the Most Merciful of the merciful.

४. तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं है, पाक है तू, बेशक मैं ज़ालिमों में से हूँ ।

4. There is no deity except You, Exalted are You. Indeed, I have been of the wrongdoers.

५. मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है उस के सिवा कोई मअबूद नहीं, उसी पर मैं ने भरोसा किया और वह अर्श-ए-अज़ीम का रब है ।

5. Sufficient for me is Allah, there is no deity except Him. On Him I have relied, and He is the Lord of The Great Throne.

६. ए आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया और आख़िरत मे मेरा वली है, तू मुझे इस्लाम की हालत में फ़ौत करना और मुझे नेक लोगों के साथ मिलाना।

6. Originator of the heavens and earth, You are my Protector in this world and in the Hereafter. Cause me to die as a Muslim and join me with the righteous.

७. ए अल्लाह बादशाहत के मालिक! तू जिसे चाहता है बादशाहत देता है और जिससे चाहता है बादशाहत छीन लेता है और तू जिसे चाहता है इज़्ज़त देता है और जिसे चाहता है ज़िल्लत देता है, तेरे हाथ में हर भलाई है, बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। तू रात को दिन मे दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और तू ज़िंदा को मुर्दा से निकालता है और तू मुर्दा को ज़िंदा से निकलता है और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रिज़्क़ देता है।

7. O Allah, Owner of Sovereignty, You give sovereignty to whom You will and You take sovereignty away from whom You will. You honor whom You will and You humble whom You will. In Your hand is (all) good. Indeed, You are over all things competent. You cause the night to enter the day, and You cause the day to enter the night; and You bring the living out of the dead, and You bring the dead out of the living. And You give provision to whom You will without account

مسنون دعائِیں

Masnoon Supplications

1.اَللّٰھُمَّ فَقِّهْنِي فِي الدِّیْنِ۝

2.اَللّٰھُمَّ حَاسِبْنِیْ حِسَابًا یَّسِیْرًا۝

3.اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّتُحِبُّالْعَفْوَفَاعْفُ عَنِّیْ۝

4.اَللّٰھُمَّ اَلْھِمْنِیْ رُشْدِیْ وَاَعِذْنِیْ مِنْ شَرِّنَفْسِیْ۝

5.(اَللّٰھُمَّ) یَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِیْ عَلَی دِیْنِکَ۝

6.اَللّٰھُمَّ یَامُصَرِّفَ الْقُلُوْبِ صَرِّفْ قُلُوْبَنَاعَلَی طَاعَتِکَ۝

7.اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْھُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَ الْغِنٰی۝

8.اَللّٰھُمَّ اٰتِ نَفْسِیْ تَقْوَاھَا وَزَکِّھَا اَنْتَ خَیْرُ مَنْ زَکَّاھَا اَنْتَ وَلِیُّھَا وَمَوْلَاھَا۝

मस्नून दुआऐं (Masnoon Supplications)

१. ए अल्लाह! मुझे दीन की समझ दे।
1. O Allah! Grant me the understanding of Deen (religion).

२. ए अल्लाह! मुझ से आसान हिसाब लेना।
2. O Allah! Take from me an easy reckoning.

३. ए अल्लाह! बेशक तू माफ़ करने वाला है, माफ़ करने को पसंद करता है, पस मुझे माफ़ कर दे ।
3.O Allah! Indeed You are the One Who forgives, You love to forgive, so forgive me.

४. ए अल्लाह! मुझे मेरी समझ बूझ इल्हाम कर दे और मुझे मेरे नफ़्स की बुराई से बचा।
4. O Allah! Bestow on me my rectitude and save me from the evil of my soul (nafs).

५. (ए अल्लाह!) ए दिलों को फ़ेरने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर जमा दे ।
5. (O Allah!) O one who turns the hearts, make my heart steadfast upon Your Deen.

६. ए अल्लाह! दिलों को फ़ेरने वाले हमारे दिलों को अपनी इताअत की तरफ़ फ़ेर दे।
6. O Allah! The One who turns the hearts, turn my heart towards Your obedience.

७. ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से हिदायत, तक़्वा, पाकदामनी और बेनीयाज़ी का सवाल करता हूँ।
7. O Allah! Indeed I ask You for guidance, Allah consciousness, chastity and contentment.

८. ए अल्लाह! मेरे नफ़्स को उस का तक़्वा दे और उस को पाक रख तू ही उस को सब से बेहतरीन पाक करने वाला है। तू ही उस का वली और मौला है।
8. O Allah! Grant piety to my soul (nafs) and purify it, You are the Best of the ones to purify it, You are its Guardian and Patron.

9.اَللّٰهُمَّ رَحْمَتَكَ اَرْجُوْ فَلَا تَكِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ طَرْفَةَ عَیْنٍ وَّاَصْلِحْ لِیْ شَاْنِیْ كُلَّهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ۝

10.اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَرِزْقًا طَیِّبًا وَعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا۝

11.اَللّٰهُمَّ انْفَعْنِیْ بِمَاعَلَّمْتَنِیْ وَعَلِّمْنِیْ مَایَنْفَعُنِیْ وَزِدْنِیْ عِلْمًا۝

12.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَ وَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَ بَارِكْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ۝

13.اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوْسَعَ رِزْقِكَ عَلَیَّ عِنْدَكِبَرِسِنِّیْ وَانْقِطَاعِ عُمُرِیْ۝

14.اَللّٰهُمَّ اكْفِنِیْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَ اَغْنِنِیْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ۝

15.اَللّٰهُمَّ قَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَبَارِكْ لِیْ فِیْهِ وَاخْلُفْ عَلَیَّ كُلَّ غَاءِبَةٍ لِّیْ بِخَیْرٍ۝

९. ए अल्लाह! मै तेरी रहमत का उम्मीदवार हूँ, पस पलक झपकने (एक लम्हे) के लिए भी मुझे मेरे नफ़्स के हवाले न कर और मेरे हालात संवार दे, तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं।

9. O Allah! I hope for Your mercy, so do not entrust me to myself (even) for the twinkling of an eye and set all my affairs straight, there is no deity except You.

१०. ए अल्लाह! मै तुझ से नफ़ा-बख़्श इल्म, पाकीज़ा **रिज़्क़** और क़ुबूल होने वाले अमल का सवाल करता हूँ।

10. O Allah! I ask You for beneficial knowledge, pure provision and acceptable deeds.

११. ए अल्लाह! मुझे फ़ायदा दे उस के साथ जो तूने मुझे सिखाया है और मुझे सिखा जो मेरे लिए फ़ायदा**मन्द है और मेरा इल्म ज़्यादा कर।**

11.O Allah! Benefit me through what You taught me and teach me what is beneficial for me and increase me in knowledge.

१२. ए अल्लाह! मेरे गुनाह बख़्श दे, मेरे घर में कुशादगी दे और मेरे रिज़्क़ में बरकत दे।

12. O Allah! Forgive me for my sin and make my home spacious and increase me in my provisions.

१३. ए अल्लाह! मुझ पर मेरे बुढ़ापे के क़रीब और मेरी उमर के ख़त्म **होने तक अपना रिज़्क़ कुशादा रखना।**

13. O Allah! Expand Your provisions for me near old age and till the end of my life.

१४. ए अल्लाह! मेरी किफ़ायत कर अपने हलाल के साथ, अपने हराम से (बचा) और मुझे अपने फ़ज़ल से अपने सिवा हर किसी से बेनीयाज़ कर दे।

14. O Allah! Suffice me with Your halaal (lawful) and (save me) from Your haraam (unlawful), and enrich me with Your favors so that I am not dependent upon no one except You.

१५. ए अल्लाह! जो रिज़्क़ तूने मुझे दिया है उस में मुझे क़िनाअत और बरकत दे और मुझे अच्छा बदला दे हर उस चीज़ का जो मेरी आँखों से ओझल है।

15. O Allah! Make me content upon whatever (blessings) You have granted me and bless me in it and compensate me with goodness for all that is out of sight.

16.اَللّٰهُمَّ لَاسَهْلَ اِلَّامَا جَعَلْتَهُ سَهْلًاوَاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزْنَ سَهْلًااِذَاشِئْتَ۔

17.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ كُلَّهُ دِقَّهُ وَجِلَّهُ وَ اَوَّلَهُ وَ آخِرَهُ وَعَلَانِيَتَهُ وَ سِرَّهُ۔

18.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الاَخْلَاقِ وَ الاَعْمَالِ وَ الاَهْوَاءِ۔

19. اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِیْ مِسْكِيْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْكِيْنًا وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَةِ الْمَسَاكِيْنِ۔

20.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ غَلَبَةِالدَّيْنِ وَغَلَبَةِالْعَدُوِّوَشَمَاتَةِالاَعْدَاءِ۔

21.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اُشْرِكَ بِكَ وَاَنَااَعْلَمُ وَ اَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ۔

22.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِوَالْقِلَّةِ وَالذِّلَّةِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ۔

१६. ए अल्लाह! कोई काम आसान नहीं मगर जिसे तू आसान कर दे और जब तू चाहता है मुश्किल को आसान कर देता है ।

16. O Allah! There is no ease except which You have made easy and You ease out the difficulty whenever you wish.

१७. ए अल्लाह! मेरे सब गुनाहों को बख़्श दे, थोडे हों या बहुत, गूज़िशता हो या मौजूद, खुले हों या छिपे ।

17. O Allah! Forgive me all my sins, whether few or numerous, those of the present and the past, those committed openly or secretly.

१८. ए अल्लाह! बेशक मैं बुरे अख़लाक़, बुरे आमाल और बुरी ख़्वाहिशात से तेरी पनाह चाहता हूँ।

18. O Allah! I seek refuge in You from a bad character and bad actions and bad desires.

१९. ए अल्लाह! मुझे मिस्कीनी की हालत में ज़िन्दा रख, मिस्कीनी में मौत दे और मिस्कीनों की जमाअत में उठा।

19. O Allah! Keep me alive (in a state of) humbleness and grant me death (in a state of) humbleness and resurrect me in the company of the humble ones.

२०. ए अल्लाह! मैं क़र्ज़ के दबाव, दुश्मन के दबाव और दुश्मनों के ख़ुश होने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

20. O Allah! I seek refuge in You from being overpowered by debt, from being overpowered by enemy, and from the rejoicing of enemies.

२१. ए अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस से कि मैं जानते-बूझते तेरे साथ शिर्क करूँ और मैं बख़्शिश माँगता हूँ उससे जो मैं अंजाने में करूँ।

21. O Allah! I seek refuge in You lest I should commit shirk with You knowingly and I seek Your forgiveness for what I commit unknowingly.

२२. ए अल्लाह! बेशक मैं मोहताजी, क़िल्लत और ज़िल्लत से तेरी पनाह चाहता हूँ और इस बात से भी तेरी पनाह चाहता हूँ के मैं ज़ुल्म करुँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाए।

22. O Allah! I seek refuge in You from poverty, deficiency and humiliation and I seek refuge in You that I wrong others or that I am wronged.

23.اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِى الاُمُوْرِ كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الاٰخِرَةِ۔

24.اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرَكِ الشَّقَاءِ وَ سُوْءِ الْقَضَاءِ وَ شَمَاتَةِ الاَعْدَاءِ۔

25.اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَ الْحَزَنِ وَ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ وَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ وَ ضَلَعِ الدَّيْنِ وَ غَلَبَةِ الرِّجَالِ۔

26.اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَ فُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَجَمِيْعِ سَخَطِكَ۔

27. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَمِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَمِنْ نَّفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا

28..اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَ لَا تَنْقُصْنَا وَ اَكْرِمْنَا وَ لَا تُهِنَّا وَ اَعْطِنَا وَ لَا تَحْرِمْنَا وَ آثِرْنَاوَلَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا وَ اَرْضِنَا وَ ارْضَ عَنَّا۔

२३. ए अल्लाह! सब कामों मे हमारा अंजाम अच्छा कर और हमें दुनिया की रुसवाई और आख़िरत के अज़ाब से बचा।

23. O Allah! Grant a good end in all our matters and save us from humiliation of the world and the torment of the Hereafter.

२४. ए अल्लाह! बेशक मैं सख़्त मुशक़्क़त, बदबख़्ती के पा लेने, बुरी तक़दीर और दुश्मनों के खुश होने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

24. O Allah! I seek refuge in You from severe trials and hardships, to be overtaken by wretchedness and bad fate and rejoicing of enemies.

२५. ए अल्लाह! बेशक मैं फ़िक्र-ओ-ग़म, आजीज़ी-ओ-सुस्ती, बुज़दिली-ओ-बुख़ल, क़र्ज़ के बोझ और लोगों के ग़ल्बे से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

25. O Allah! I seek refuge in You from worries and grief, and from helplessness and laziness, and from cowardice and miserliness and from the overpowering of debt and domination of the people.

२६. ए अल्लाह! बेशक मैं तेरी दी गई नेअमतों के खो जाने से, तेरी दी गई आफ़ियत के बदल जाने से, तेरी सज़ा के अचानक आ जाने और तेरी हर क़िस्म की नाराज़गी से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

26. O Allah! I seek refuge in You from a decline in Your bounties, and a change of state of well-being, a sudden onset of Your punishment and (from) all Your wrath.

२७. ए अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस इल्म से जो फ़ायदा ना दे और उस दिल से जो ना डरे और उस नफ़्स से जो सैर ना हो और उस दुआ से जो क़ुबूल ना की जाए।

27. O Allah! I seek refuge in You from knowledge that is not beneficial and from a heart that does not fear, from a soul that is not satiated and from a prayer that is not answered.

२८. ए अल्लाह! हमें ज़्यादा दे और कम ना कर, हमें इज़्ज़त दे और ज़लील न कर और हमें अता कर और महरूम न कर, हमें दूसरों पर मुक़द्दम कर और ह्म पर किसी को मुक़द्दम न कर और हमें राज़ी कर और हमसे राज़ी हो।

28. O Allah! Increase for us and do not diminish us, honor us and do not humiliate us, grant us and do not deprive us, enable us to prevail (upon others) and do not let us be prevailed by others; please us and be pleased with us.

29.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ یَوْمِ السُّوْءِ وَ مِنْ لَیْلَةِ السُّوْءِ وَ مِنْ سَاعَةِ السُّوْءِ وَ مِنْ صَاحِبِ السُّوْءِ وَ مِنْ جَارِ السُّوْءِ فِی دَارِ الْمُقَامَةِ۔

30.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ خَطِیْئَتِیْ وَ جَهْلِی وَ اِسْرَافِیْ فِیْ اَمْرِیْ وَ مَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهِ مِنِّی، اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ هَزْلِی وَجِدِّیْ وَخَطَئِیْ وَعَمْدِیْ وَ كُلُّ ذٰلِكَ عِنْدِیْ۔

31.اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِیْ مِنَ النِّفَاقِ وَ عَمَلِیْ مِنَ الرِّیَاءِ وَ لِسَانِیْ مِنَ الْكَذِبِ وَعَیْنِیْ مِنَ الْخِیَانَةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الاَعْیُنِ وَ مَا تُخْفِی الصُّدُوْرُ۔

32.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنَ الْخَیْرِكُلِّهِ عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ مَاعَلِمْتُ مِنْهُ وَمَالَمْ اَعْلَمْ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهِ عَاجِلِهِ وَ آجِلِهِ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَ مَا لَمْ اَعْلَمْ۔

33.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَیْرِمَاسَاَلَكَ عَبْدُكَ وَنَبِیُّكَ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّمَاعَاذَبِهِ عَبْدُكَ وَنَبِیُّكَ۔

२९. ए अल्लाह! बेशक मैं बुरे दिन, बुरी रात, बुरी घड़ी ,बुरे दोस्त और रहने की जगह में बुरे पड़ोसी से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

29. O Allah! I seek refuge in You from an evil day, and an evil night, and an evil moment and an evil companion and from an evil neighbor at the place of staying.

३०. ए अल्लाह! बख़्श दे मेरी ख़ता, मेरी जहालत, मेरे काम में मेरी ज़्यादती और वह जिस के बारे में तू मुझ से ज़्यादा जानता है, ए अल्लाह! हंसी मज़ाक़ में, संजीदगी में, भूल के और जान कर किए हुए मेरे गुनाह बख़्श दे और यह सब मेरे अंदर हैं।

30. O Allah! Forgive my faults, my ignorance, exceeding in my matters and all that which You know better than me. O Allah! Forgive my sins done in jest, (those done) knowingly, (those done) mistakenly and those done intentionally and all that are in me.

३१. ए अल्लाह! मेरे दिल को निफ़ाक़ से, मेरे अमल को दिखावे से, मेरी ज़बान को झूठ से और मेरी आँख को खियानत से पाक कर दे, बेशक तू आँखों की खियानत और सीनों के छिपे हुए राज़ जानता है।

31. O Allah! Purify my heart from hypocrisy and my actions from showing off (riyaa) and my tongue from lying and my eyes from treachery. Indeed, You know the treachery of the eyes and what is hidden in the chests.

३२. ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से जल्दी मिलने वाली (दुनिया की) और देर से मिलने वाली (आख़िरत की) तमाम भलाईयों का सवाल करता हूँ, इन में से जिन को मैं जानता हूँ और जिन को मैं नहीं जानता और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ जल्दी मिलने वाली (दुनिया की) और देर से मिलने वाली (आख़िरत की) तमाम बुराईयों से जिन को मैं जानता हूँ और जिन को मैं नहीं जानता ।

32. O Allah! Indeed I ask You for all the goodness of the hastened one (this world) and of the delayed one (the Hereafter), from what I know and what I do not know. O Allah! I seek refuge in You from all the evil of the hastened one (this world) and of the delayed one (the Hereafter), from what I know and what I do not know.

३३. ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से हर उस भलाई का सवाल करता हूँ जिस का सवाल तेरे बन्दे और नबी ﷺ ने किया और हर उस बुराई से पनाह चाहता हूँ जिस से तेरे बन्दे और नबी ﷺ ने पनाह चाही।

33. O Allah! Indeed I ask You of all good which Your servant and Prophet ﷺ asked for and I seek refuge in You from all evils that Your servant and Prophet ﷺ sought refuge from.

34.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْجَنَّةَ وَ مَا قَرَّبَ اِلَیْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ النَّارِ وَ مَا قَرَّبَ اِلَیْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَّ اَسْئَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ كُلَّ قَضَاءٍ قَضَیْتَهُ لِیْ خَیْرًا۔

35.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعَوْذُبِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجُبْنِ وَ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اُرَدَّ اِلَی اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْیَا وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْ قَبْرِ ۔

36.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عَقُوبَتِكَ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْكَ، لَا اُحْصِیْ ثَنَاءً عَلَیْكَ، اَنْتَ كَمَا اَثْنَیْتَ عَلَی نَفْسِكَ۔

37.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ مَا قَدَّمْتُ وَ مَا اَخَّرْتُ وَ مَا اَسْرَرْتُ وَ مَا اَعْلَنْتُ وَ مَا اَسْرَفْتُ وَ مَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِهِ مِنِّیْ، اَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَ اَنْتَ الْمُؤَخِّرُ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ۔

३४. ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से सवाल करता हूँ, जन्नत का और हर उस क़ौल या अमल का जो उस (जन्नत) के क़रीब कर दे, मै तेरी पनाह चाहता हूँ आग से और हर उस क़ौल या अमल से जो उस (आग) के क़रीब कर दे और और मैं तुझ से सवाल करता हूँ की हर फ़ैसले को जो तूने मेरे लिए करना है मेरे हक़ में बेहतर बना दे।

34. O Allah! I ask You of Paradise and those words and actions that will draw me near to it. I seek refuge in You from the Fire and from those words and actions that will draw me near to it. I ask You that You make, every (thing) You have decreed (for me), a means of goodness for me.

३५. ए अल्लाह! मै तेरी पनाह चाहता हूँ बुख़ल से, तेरी पनाह चाहता हूँ बुज़दिली से, तेरी पनाह चाहता हूँ इस से कि मैं बेकार उमर की तरफ़ लौटाया जाऊँ, तेरी पनाह चाहता हूँ दुनिया की आज़माइश से और तेरी पनाह चाहता हूँ क़बर के अज़ाब से।

35. O Allah! I seek refuge in You from miserliness and I seek refuge in You from cowardice and I seek refuge in You that I am returned to a pathetic age and I seek refuge in You from the trials of the world and I seek refuge in You from the torment of the grave.

३६. ए अल्लाह! मैं तेरे ग़ुस्से की निसबत तेरी रज़ा की तेरे अज़ाब की निसबत तेरी आफ़ियत चाहता हूँ, और मैं तुझ से तेरी ही पनाह चाहता हूँ, मुझ में तेरी तारीफ़ करने की ताक़त नहीं, तू एसा ही है जैसी तूने अपनी ख़ुद तारीफ़ की।

36. O Allah! I seek refuge in Your pleasure from You anger, in Your forgiveness from Your retribution, I seek refuge in You from You. I do not have strength to praise You; You are as You have praised Yourself.

३७. ए अल्लाह! मेरे लिए बख़्श दे जो मैं ने पहले किया और जो मैं ने बाद में किया, जो मैं ने छिपाया और जो मैं ने ज़ाहिर किया, जो मैं ने हदों को पार किया और वह जो तू मुझ से ज़्यादा जानता है। तू सब से पहले और सब से आख़िर है, तेरे सिवा कोई मअबूद नहीं।

37. O Allah! Forgive for me whatever I have sent ahead and whatever I have delayed; whatever I have hidden and whatever I have disclosed; whatever I have exceeded in and whatever You know about it (sins) more than me. You are the Foremost and the Final; there is no deity except You.

38.اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِیْ حُبَّكَ وَ حُبَّ مَنْ یَّنْفَعُنِیْ حُبُّهُ عِنْدَكَ، اَللّٰهُمَّ مَا رَزَقْتَنِیْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ قُوَّةً لِّیْ فِیْمَا تُحِبُّ، اَللّٰهُمَّ وَ مَا زَوَیْتَ عَنِّیْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ فَرَاغًا لِیْ فِیْمَا تُحِبُّ۔

39. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ التَّرَدِّیْ وَ الْهَدْمِ وَ الْغَرَقِ وَ الْحَرِیْقِ وَ اَعُوْذُبِكَ اَنْ یَّتَخَبَّطَنِیَ الشَّیْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَمُوْتَ فِیْ سَبِیْلِكَ مُدْبِرًا وَّ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَمُوْتَ لَدِیْغًا۔

40.اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَ اَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَاشِیْ وَ اَصْلِحْ لِیْ آخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ وَ اجْعَلِ الْحَیَاةَ زِیَادَةً لِّیْ فِیْ كُلِّ خَیْرٍ وَّ اجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ كُلِّ شَرٍّ۔

41. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ الاَشْیَاءِ اِلَیَّ وَ اجْعَلْ خَوْفِكَ اَخْوَفَ الاَشْیَاءِ اِلَیَّ وَ اقْطَعْ عَنِّیْ حَاجَاتِ الدُّنْیَا بِالشَّوْقِ اِلَی لِقَائِكَ وَاِذَا اَقْرَرْتَ اَعْیُنَ اَهْلِ الدُّنْیَا مِنْ دُنْیَاهُمْ فَاَقْرِرْ عَیْنِیْ مِنْ عِبَادَتِكَ۔

३८. ए अल्लाह! मुझे अपनी मुहब्बत दे और उस शख़्स की मुहब्बत दे जिसकी मुहब्बत मुझे तेरे क़रीब होने में फायदा दे, ए अल्लाह! तेरे अता किए हूए में से जिससे मैं मुहब्बत करता हूँ तू उसको मेरे उन कामों के लिए कुव्वत का सबब बना जिनसे तू मुहब्बत करता है, ए अल्लाह! जो तूने मुझसे ले लिया है वह जिससे मैं मुहब्बत करता हूँ तो उसको मेरे उन कामों के लिए फ़राग़त का बाइस बना जिनसे तू मुहब्बत करता है ।

38. O Allah! Grant me Your love and the love of those whose love will help me draw nearer to You. O Allah! Whatever You have provided me of that which I love, then make it a means to strengthen me for that which You love. O Allah! And what You have kept away from me of that which I love, then make it a means for me to be free for that which You love.

३९. ए अल्लाह! बेशक मैं गिर कर मरने, दब कर मरने, डूब कर मरने और जल कर मरने से तेरी पनाह चाहता हूँ, और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उससे कि **मौत के वक़्त शैतान मुझे उचक ले और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इससे** कि **तेरे रास्ते में पीठ फ़ेरते हुए मारा जाऊँ, और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ** कि **मेरी मौत (ज़ेहरीले जानवर के) इसने से हो।**

39. O Allah! I seek refuge in You from falling from above and to be buried beneath debris and drowning and burning and I seek refuge in You from being led astray by the Satan at the time of death and I seek refuge in You from turning my back and fleeing from the battlefield and I seek refuge in You that I die from the bite (of a venomous animal).

४०. ए अल्लाह! तू मेरे दीन को संवार दे जो मेरे मुआमले का मुहाफ़िज़ है, मेरी दुनिया संवार दे जिसमे मेरी मईशत है, मेरी आख़िरत संवार दे जहाँ मुझे लौटना है मेरी ज़िंदगी को हर भलाई में इज़ाफ़े का सबब और मौत को हर बुराई से राहत का सबब बना दे।

40. O Allah! Reform for me my Deen, which is a source of guarding my affairs and reform for me my world wherein is my livelihood, reform for me my Hereafter wherein is my return and make my life, a source of abundant goodness and make my death a source of peace from all evils.

४१. ए अल्लाह! अपनी मुहब्बत को मेरे लिए हर चीज़ की मुहब्बत से बढ़ा दे, मुझ में अपना ख़ौफ़ हर चीज़ के ख़ौफ़ से ज़्यादा कर दे, दुनिया की हर तलब पर अपनी मुलाक़ात का शौक़ ग़ालिब कर दे और जब तू दुनिया वालों को उनकी दुनिया से ठंडक दे तो मेरी आँखों की ठंडक अपनी इबादत में रख दे।

41. O Allah! Increase Your love for me, over the love of all other things, exceed Your fear, over the fear of all other things and exceed my eagerness to meet You, over all the worldly desires, and when the eyes of the people of the world are cooled by their world, place the coolness of my eyes in Your worship.

42.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَ تَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ وَ حُبَّ الْمَسَاكِيْنِ وَاَنْ تَغْفِرَلِیْ وَ تَرْحَمَنِیْ وَ اِذَا اَرَدْتَّ فِتْنَةً فِیْ قَوْمٍ فَتَوَفَّنِیْ غَيْرَ مَفْتُوْنٍ وَاَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَ حُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَ حُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُنِیْ اِلَی حُبِّكَ۔

43. اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِيْل وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْرَافِيْلَ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالاَرْضِ،عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ، اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ،اِهْدِنِیْ لِمَااخْتُلِفَ فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِكَ، اِنَّكَ تَهْدِیْ مَنْ تَشَاءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُسْتَقِيْمٍ۔

44.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَ الْكَسَلِ وَ الْجُبْنِ وَ الْبُخْلِ وَ الْهَرَمِ وَالْقَسْوَةِ وَ الْغَفْلَةِ وَ الْعَيْلَةِ وَ الذِّلَّةِ وَ الْمَسْكَنَةِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْكُفْرِ وَالْفُسُوْقِ وَالشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَالسُّمْعَةِ وَالرِّيَاءِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ وَالْبَكَمِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَ الْبَرَصِ وَسَيِّءِ الاَسْقَامِ۔

४२. ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से नेकियां करने, बुराईयों से बचने और मिस्कीनों से मुहब्बत का सवाल करता हूँ और ये के तू मुझे बख़्श दे और मु्झ पर रहम फरमा और जब तू किसी क़ौम को आज़माइश में डालने का इरादा करे तो मुझे बिना आज़माइश के फौत कर दे, मैं तुझ से तेरी मुहब्बत का सवाल करता हूँ और उसकी मुहब्बत का जो तुझ से मुहब्बत करता है और उस अमल की मुहब्बत का जो मुझे तेरी मुहब्बत के क़रीब कर दे।

42. O Allah! I ask You for being able to do good deeds, and (for) abstaining from bad deeds and to love the deprived ones. And that You forgive me and have mercy on me and whenever You intend putting a nation on trial, grant me death without undergoing that trial. I ask You of Your love and the love of those who love You and the love of the deeds which will draw me nearer to Your love.

४३. ए अल्लाह! जिबराईल, मिकाईल और इसराफ़ील के रब, आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ायब और हाज़िर के जानने वाले, तू अपने बन्दों के बीच फ़ैसला करेगा जिन में वह इख़तिलाफ़ करते हैं, इख़तिलाफ़ की उन बातों में तू मुझे अपनी तौफ़ीक़ से हक़ की राह दिखा क्यूंकी तू ही जिसे चाहता है सीधे रासते की तरफ़ हिदायत देता है।

43.O Allah! Lord of Jibrae'l, Mikaee'l and Israf'eel, Originator of the heavens and the earth, Knower of the unseen and the evident, You will judge between Your servants in which they differ, (You) Guide me with Your consent to the Truth in what they differ, indeed You guide whomever You will towards the straight path.

४४. ए अल्लाह! मैं आजिज़ी और सुस्ती, बुज़दिली और बुखल, इंतिहाई बुढ़ापे और सख़्त दिली, ग़फ्लत और तंगदस्ती, ज़िल्लत और नादारि से तेरी पनाह चाहता हूँ और मोहताजी, कुफ़्र, नाफ़र्मानी, मुख़ालिफ़त, मुनाफ़िक़त, बुरी शोहरत और रियाकारी से मै तेरी पनाह चाहता हूँ और मैं बेहरा होने, गूंगा होने, पागलपन, कोढ़, बरस और तमाम बुरी बीमारियों से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

44. O Allah! I seek refuge in You from helplessness, laziness, cowardice, miserliness, senility (weakness of old age), harshness, heedlessness, scantiness, humiliation and deprivation, I seek refuge in You from poverty, infidelity, disobedience, opposition, hypocrisy, bad reputation and pretence; I seek refuge in You from deafness, dumbness, insanity, leprosy, leucoderma and from all bad diseases.

45. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ جَارِ السُّوْءِ وَ مِنْ زَوْجٍ تُشَيِّبُنِیْ قَبْلَ الْمَشِيْبِ وَمِنْ وَلَدٍ يَكُوْنُ عَلَیَّ رِبًا وَّ مِنْ مَّالٍ يَكُوْنُ عَلَیَّ عَذَابًا وَّ مِنْ خَلِيْلٍ مَّاكِرٍ عَيْنُهُ تَرَانِیْ وَ قَلْبُهُ يَرْعَانِیْ اِنْ رَّاٰی حَسَنَةً دَفَنَهَا وَ اِنْ رَّاٰی سَيِّئَةً اَذَاعَهَا۔

46.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُكَ، ابْنُ عَبْدِكَ، ابْنُ اَمَتِكَ، نَاصِيَتِیْ بِيَدِكَ، مَاضٍ فِیَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِیَّ قَضَاؤُكَ، اَسْئَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَلَكَ، سَمَّيْتَ بِهِنَفْسَكَ اَوْ عَلَّمْتَهُ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ اَوْ اَنْزَلْتَهُ فِیْ كِتَابِكَ اَوِسْتَاْثَرْتَ بِهِ فِیْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيْعَ قَلْبِیْ وَنُوْرَصَدْرِیْ وَجَلَاءَحُزْنِیْ وَذَهَابَ هَمِّیْ۔

47.اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّ فِیْ بَصَرِیْ نُوْرًا وَّ فِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّ عَنْ يَّمِيْنِیْ نُوْرًا وَّ عَنْ يَّسَارِیْ نُوْرًا وَّ فَوْقِیْ نُوْرًا وَّ تَحْتِیْ نُوْرًا وَّ اَمَامِیْ نُوْرًاوَّ خَلْفِیْ نُوْرًا وَّ اجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا وَّ فِیْ لِسَانِیْ نُوْرًا وَّ عَصَبِیْ نُوْرًا وَّ لَحْمِیْ نُوْرًا وَّ دَمِیْ نُوْرًا وَّ شَعْرِیْ نُوْرًا وَّ بَشَرِیْ نُوْرًا وَّ اجْعَلْ فِیْ نَفْسِیْ نُوْرًا وَّ اَعْظِمْ لِیْ نُوْرًا، اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ نُوْرًا۔

४५. ए अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुरे पड़ोसी से और एसे जिवन-साथी से जो बुढ़ापे से पहले ही मुझे बूढ़ा कर दे और एसी औलाद से जो मेरे लिए वबाल (बोझ) हो और एसे माल से जो मेरे ऊपर अज़ाब (का सबब) बने और एसे मक्कार दोस्त से जिस की आँखें और दिल मेरी निगरानी करते हों अगर वह मुझ में कोई ख़ूबी देखे तो उस को अपने तक ही रखे और अगर मेरी कोई बुराई देखे तो उस का चर्चा करे ।

45. O Allah! I seek Your protection from an evil neighbor, and from a spouse who will cause me to grow old before my time, and from children who will become a source of misery and grief for me, and from wealth which will become a means of torment for me, and a treacherous friend whose eyes are always watching me, and in his heart, he is probing into my affairs. And if he sees any good in me, he will conceal it but if he comes across any faults in my character, he will expose them to all.

४६. ए अल्लाह! बेशक मैं तेरा बंदा हूँ और तेरे बंदे का बेटा हूँ और तेरी बंदी का बेटा हूँ, मेरी पेशानी तेरे हाथ में है, मेरे बारे मे तेरा हुक्म जारी है, मेरे बारे मे तेरा फ़ैसला इंसाफ़ पर मब्नि है, मैं तेरे हर उस नाम के साथ जो तू ने अपने लिए पसंद किया या अपनी मख़लूक़ में से किसी को सिखाया या अपनी किताब में तू ने उसको नाज़िल किया है या तू ने उसे अपने इल्म-ए-ग़ैब में रखने को तरजीह दी है, सवाल करता हूँ की तू क़ुरआन को मेरे दिल की बहार और सीने का नूर और मेरे मेरे रंज और मेरी परेशानियों को दूर करने का ज़रिया बना दे।

46. O Allah! Indeed I am Your servant, the son of Your bondsman and bondswoman, my forehead is in Your Hand (i.e. You have control over me), Your Judgment (comes to) pass over me and Your decree over me is Just. I ask You with every name of Yours (that) You have named for Yourself or taught anyone of Your creation or revealed in Your Book or You have preferred (to keep) in the knowledge of the unseen with Yourself, that You make the Qur`an, the delight of my heart, and the light of my chest and departure of my sorrow and a release for my anxiety.

४७. ए अल्लाह! डाल दे मेरे दिल में नूर, मेरी आँखों में नूर, मेरे कानों में नूर, मेरे दाऐं नूर, मेरे बाऐं नूर, मेरे ऊपर नूर, मेरे नीचे नूर, मेरे आगे नूर, मेरे पीछे नूर और बना दे मेरे लिए नूर, मेरी ज़बान में नूर और बना दे मेरे पट्ठे नूरानी, मेरा गोशत नूरानी, मेरा ख़ून नूरानी, मेरे बाल नूरानी, मेरी जिल्द नूरानी और डाल दे मेरे नफ़्स में नूर और बढ़ा दे मेरे लिए नूर, ए अल्लाह! मुझे नूर अता फरमा।

47. O Allah! Make light in my heart, and light in my sight, and light in my hearing, and light to my right and light to my left, and light above me and light below me, and light before me and light behind me, and make light for me, and light in my tongue, and light in my muscles, and light in my flesh, and light in my blood, and light in my hair, and light in my body, and make light in my soul and intensify the light for me. O Allah! Bestow me with light.

48.رَبِّ اَعِنِّیْ وَ لَا تُعْنِ عَلَیَّ وَ انْصُرْنِیْ وَ لَا تَنْصُرْ عَلَیَّ وَ امْکُرْ لِیْ وَ لَاتَمْکُرْعَلَیَّ وَ اهْدِنِیْ وَ یَسِّرْلِیَ الْهُدَی وَ انْصُرْنِیْ عَلَی مَنْ بَغَی عَلَیَّ،رَبِّ اجْعَلْنِیْ لَکَ شَکَّارًا،لَّکَ ذَکَّارًا، لَّکَ رَهَّابًا ، لَّکَ مِطْوَاعًا، لَّکَ مُخْبِتًا، اِلَیْکَ اَوَّاهًا مُّنِیْبًا، رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِیْ وَ اغْسِلْ حَوْبَتِیْ وَ اَجِبْ دَعْوَتِیْ وَ ثَبِّتْ حُجَّتِیْ وَسَدِّدْ لِسَانِیْ وَاهْدِ قَلْبِی وَ اسْلُلْ سَخِیْمَةَصَدْرِیْ۔

49.اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ رَبَّنَا وَ رَبَّ کُلِّ شَیْءٍ مُّنْزِلَ التَّوْرٰةِ وَ الاِنْجِیْلِ وَالْقُرْآنِ الْعَظِیْمِ، اَنْتَ الاَوَّلُ فَلَیْسَ قَبْلَکَ شَیْءٌوَّاَنْتَ الاٰخِرُ فَلَیْسَ بَعْدَکَ شَیْءٌ وَّاَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَیْسَ فَوْقَکَ شَیْءٌ وَّاَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَیْسَ دُوْنَکَ شَیْءٌ، اِقْضِ عَنَّا الدَّیْنَ وَ اَغْنِنَامِنَ الْفَقْرِ۔

४८. ए मेरे रब! मेरी मदद फरमा और मेरे खिलाफ़ मदद न कर, मुझे ग़ल्बा दे और मेरे ऊपर ग़ल्बा न दे, मेरे लिए तदबीर कर और मेरे खिलाफ़ तदबीर न कर, मुझे हिदायत दे और मेरे लिए हिदायत को आसान बना दे, मेरी मदद कर उस के खिलाफ़ जो मुझ पर ज़्यादती करे। ए मेरे रब! मुझे अपना बहुत शुक्र करने वाला ,बहुत ज़िक्र करने वाला, बहुत इ़रने वाला, बहुत इताअत करने वाला, बहुत आजिज़ी करने वाला बना दे, अपनी तरफ़ आँहें भरने वाला, रुजूअ करने वाला बना दे, ए मेरे रब! मेरी तौबा क़ुबूल कर और मेरे गुनाह धो डाल, मेरी दुआ क़ुबूल कर, मेरी दलील को साबित रख, मेरी ज़बान सीधी रख और मेरे दिल को हिदायत दे और मेरे सीने से कीना निकाल दे।

48. O my Lord! Help me and do not help (others) against me, and help me (to overpower them) and do not help them (over power) against me, and plan for me and do not plan against me and guide me and make the guidance easy for me and help me against whoever oppresses me, O my Lord! Make me one most grateful to You, one who remembers You greatly, one who fears You greatly, one who obeys You greatly, one who exhibits humbleness greatly, one who sighs greatly and turns towards You, O my Lord! Accept my repentance, and wash away my sins, and accept my supplications, and keep firm my proof, and keep my tongue truthful, and guide my heart, and remove grudges from my heart.

४९. ए अल्लाह! सातों आसमानों और अर्श-ए-अज़ीम के रब, ए हमारे और तमाम चीज़ों के रब, ए तौरात, इंजील और क़ुरआन-ए-अज़ीम के उतारने वाले, तू ही अव्वल है पस तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं और तू ही आख़िर है पस तेरे बाद कोई चीज़ नहीं और तू ही ज़ाहिर है पस तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं और तू ही बातिन है पस तेरे सिवा कोई चीज़ नहीं, हम से क़र्ज़ अदा करवा दे और हमें मोहताजी से मालदार कर दे।

49. O Allah! Lord of the seven heavens and the Great Throne, our Lord and the Lord of all the things, Revealer of the Torah, the Injeel and the Exalted Qur`an, You are the First, so there is nothing before You and You are the Last, so there is nothing after You and You are the Manifest, so there is nothing above You and You are the Hidden, so there is nothing (closer) besides You, settle my debt for me and enrich me from poverty.

50.اَللّٰهُمَّ بِعِلْمِكَ الْغَيْبَ وَ قُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ، اَحْيِنِىْ مَا عَلِمْتَ الْحَيَاةَ خَيْرًا لِّىْ وَ تَوَفَّنِىْ اِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِّىْ، اَللّٰهُمَّ وَاَسْئَلُكَ خَشْيَتَكَ فِىْ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَاَسْئَلُكَ كَلِمَةَ الْحَقِّ فِىْ الرِّضَاءِ وَالْغَضَبِ وَ اَسْئَلُكَ الْقَصْدَ فِىْ الفَقْرِ وَ الغِنَى وَاَسْئَلُكَ نَعِيْمًا لَّا يَنْفَدُ وَاَسْئَلُك قُرَّةَعَيْنٍ لَّا تَنْقَطِعُ وَاَسْئَلُكَ الرِّضَاءَ بَعْدَ الْقَضَاءِوَ اَسْئَلُكَ بَرْدَالْعَيْشِبَعْدَ الْمَوْتِ وَاَسْئَلُكَ لَذَّةَ النَّظَرِاِلَى وَجْهِكَ وَالشَّوْقَ اِلَى لِقَائِكَ فِىْ غَيْرِضَرَّاءَ مُضِرَّةٍ وَّلَا فِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ، اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الاِيْمَانِ وَ اجْعَلْنَا هُدَاةً مُّهْتَدِيْنَ

५०. ए अल्लाह तू अपने इल्म-ए-ग़ैब और मखलूक़ पर अपनी क़ुदरत की बदौलत, मुझे ज़िन्दा रख जब तक तू समझता है की मेरे लिए ज़िन्दा रहना बेहतर है और मुझे मौत दे जब तक तू समझता है की मेरे लिए मौत बेहतर है। ए अल्लाह! और मैं ग़ैब और हाज़िर में तुझ से इरते रहने का सवाल करता हूँ, रज़ामंदी और ग़ज़ब की हालत में हक़ बात कहने की तौफ़ीक़ चाहता हूँ, मोहताजी और मालदारी में म्यानारवि का सवाल करता हूँ, ना ख़त्म होने वाली नेअमत माँगता हूँ, ना ख़त्म होने वाली आँखों की ठंडक माँगता हूँ, तक़दीर के फ़ैसले पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ, मौत के बाद अच्छी ज़िन्दगी माँगता हूँ, तेरे चेहरे की तरफ़ देखने की लज़्ज़त का आरज़ूमन्द हूँ, तेरी मुलाक़ात का शौक़ रखता हूँ बग़ैर किसी नुक़सान पहुँचाने वाली तकलीफ़ के और बग़ैर गुमराह करने वाले फित्ने के, ए अल्लाह तू हम को इमान की ज़ीनत से सजा दे और हम को हिदायत पाने वालों का रेहुमा बना दे ।

50. O Allah! By Your knowledge of the unseen and by Your power over Your creation, keep me alive as long as You know that being alive is best for me, and grant me death when You know that death is best for me. O Allah! Indeed I ask You of Your fear in the hidden and evident; I ask You for a truthful speech in the state of contentment and in fury and I ask You for moderation in wealth and in poverty and I ask You for never-ending favors, I ask You for unceasing coolness of the eyes, I ask You for contentment on Your decree and the pleasure of life after death and I ask You for the delight of looking at Your Countenance and eagerness of meeting You without undergoing any harmful difficulty or a trial that leads astray. O Allah! Adorn us with the beauty of faith and make us a guide of the guided ones.

51.اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَ الْمَسْاَلَةِ وَ خَیْرَ الدُّعَاءِ وَ خَیْرَ النَّجَاحِ وَ خَیْرَ لْعَمَلِ وَ خَیْرَ الثَّوَابِ وَ خَیْرَ الْحَیَاةِ وَ خَیْرَ الْمَمَاتِ وَ ثَبِّتْنِیْ وَ ثَقِّلْ مَوَازِیْنِیْ وَ حَقِّقْ اِیْمَانِیْ وَ ارْفَعْ دَرَجَاتِیْ وَ تَقَبَّلْ صَلَاتِیْ وَ اغْفِرْ خَطِیْئَتِیْ وَ اَسْئَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی مِنَ الْجَنَّةِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ فَوَاتِحَ الْخَیْرِ وَ خَوَاتِمَهُ وَ جَوَامِعَهُ وَ اَوَّلَهُ وَ ظَاهِرَهُ وَ بَاطِنَهُ وَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی مِنَ الجَنَّةِ آمِیْن. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَیْرَ مَا آتِی وَ خَیْرَ مَا اَفْعَلْ وَ خَیْرَ مَا اَعْمَلُ وَ خَیْرَ مَا بَطَنَ وَ خَیْرَ مَا ظَهَرَ وَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی مِنَ الجَنَّةِ آمِیْن. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اَنْ تَرْفَعَ ذِكْرِیْ وَ تَضَعَ وِزْرِیْ وَ تُصْلِحَ اَمْرِیْ وَ تُطَهِّرَ قَلْبِیْ وَ تُحْصِّنَ فَرْجِیْ وَ تُنَوِّرَ لِیْ قَلْبِیْ وَ تَغْفِرَلِیْ ذَنْبِیْ وَ اَسْئَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی مِنَ الجَنَّةِ آمِیْن. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ اَنْ تُبَارِكَ لِیْ فِیْ نَفْسِیْ وَ فِیْ سَمْعِیْ وَ فِیْ بَصَرِیْ وَ فِیْ رُوْحِیْ وَ فِیْ خُلُقِیْ وَ فِیْ اَهْلِیْ وَ فِیْ مَحْیَایَ وَ فِیْ مَمَاتِیْ وَ فِیْ عَمَلِیْ فَتَقَبَّلْ حَسَنَاتِیْ وَ اَسْئَلُكَ

الدَّرَجَاتِ الْعُلٰی مِنَ الجَنَّةِ آمِیْن.

५१. ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से बेहतरीन सवाल करना, बेहतरीन दुआ, बेहतरीन निजात, बेहतरीन अमल, बेहतरीन सवाब, बेहतरीन ज़िन्दगी और बेहतरीन मौत माँगता हूँ। और मुझे साबित क़दम रख, मेरा नाम-ए-आमाल वज़नी कर, मेरा इमान साबित कर, मेरे दर्जे बुलंद कर, मेरी नमाज़ क़ुबूल कर और मेरी ख़ता बख़्श दे। मैं तुझ से जन्नत के बुलंद दर्जों का सवाल करता हूँ, ए अल्लाह! बेशक मै तुझ से भलाई का आग़ाज़ और उस का (भलाई पर) इख़तिताम, उस का जामेअ होना, उसकी इब्तिदा, उसका ज़ाहिर और उसका बातिन और जन्नत के बुलंद दर्जे माँगता हूँ, आमीन। मैं तुझ से सवाल करता हूँ ख़ैर का जो तू मुझे दे और ख़ैर का जो मैं काम करूँ और ख़ैर का जो मैं अमल करूँ और ज़ाहिर-ओ-बातिन में ख़ैर का और जन्नत के बुलंद दर्जे माँगता हूँ, आमीन। ए अल्लाह! मै तुझ से सवाल करता हूँ, की तू मेरा ज़िक्र बुलंद कर दे और मेरे बोझ उतार दे, मेरे काम कि इस्लाह कर दे, मेरे दिल को पाक कर दे, मेरी शर्मगाह को महफूज़ रख, मेरे दिल को मेरे लिए मुनव्वर कर दे, मेरे गुनाह बख़्श दे और मै तुझ से जन्नत के बुलंद दर्जों का सवाल करता हूँ, आमीन। ए अल्लाह! बेशक मैं तुझ से सवाल करता हूँ की तू मेरे नफ़्स में, मेरी समाअत और मेरी निगाह में, मेरी रुह और मेरी तख़लीक़ में, मेरे अख़लाक़ और मेरे घरवालों में, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत में और मेरे अमल में बरकत देई तू मेरी नेकियां क़ुबूल कर और मैं तुझ से जन्नत बुलंद दर्जों का सवाल करता हूँ, आमीन।

51. O Allah! Indeed I ask You that I make the best appeal, and the best supplication, and the best salvation, and the best deeds, and the best reward, and the best life and the best death and to keep me steadfast, and to make my scale heavy (of good deeds), and establish my faith, and elevate my ranks, accept my prayers and forgive my mistakes, I ask You for the highest levels of Paradise. O Allah! Indeed I ask You for the onset of goodness and its completion (in goodnesses), its foremost and its last, its apparent and its hidden, I ask You for the highest levels of Paradise, Aameen. O Allah! I ask You for goodness of what You have given, and put goodness in whatever I will do, and in all the deeds that I will do, of what is hidden and what is evident, and I ask You for the highest levels of Paradise, Aameen. O Allah! I ask You to elevate my remembrance (of You), and unload my burdens, and reform my affairs, and purify my heart, and safeguard my private parts, and illuminate my heart for me, and forgive my sins, I ask you for the highest levels of Paradise, Aameen. O Allah! Indeed I ask You that You bless for me in my soul (nafs), and in my hearing, and in my sight and in my soul, and in my creation, and in my conduct, and in my family, and in my life, and in my death, and in my deeds, so accept my good deeds, and I ask You for the highest levels of Paradise, Aameen.

52. اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِنَا وَ اَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِنَا وَ اهْدِنَا سُبُلَ السَّلَامِ وَ نَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَ جَنِّبْنَا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَ مَا بَطَنَ وَ بَارِكْ لَنَا فِيْ اَسْمَاعِنَا وَ اَبْصَارِنَا وَ قُلُوْبِنَا وَ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيَّاتِنَا وَ تُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ وَ اجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعَمِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا عَلَيْكَ قَابِلِيْنَ لَهَا وَ اَتْمِمْهَا عَلَيْنَا۔

५२. ए अल्लाह! हमारे दिलों में उल्फ़त डाल दे और हमारी बाहम इस्लाह फ़रमा, हमें सलामती के रास्ते दिखा और हमें अंधेरों से रोश्नी की तरफ़ निजात दे, हमें ज़ाहिरी और छिपे हुए गुनाहों से बचा, हमारे लिए हमारी समाअतों, बसारतो, दिलों, बिवीयों और औलाद में बरकत दे, तू हम पर मेहरबान हो जा, बेशक तू ही तौबा क़ुबूल करने, वाला रहम करने वाला है। हमें अपनी नेअमतों का शुक्र अदा करने वाला बना दे ताकि उनके ज़रिए एक दूसरे के मुक़ाबले में तेरी तारीफ़ करने वाले बन जाएं और उन्हें (नेअमतों को) हम पर पूरा कर दे।

52. O Allah! Put affection amongst our hearts, and reform our matters within us, and guide us to the path of peace, and save us from the darkness (and guide) towards the light, and save us from all (kinds of) obscenity, the apparent as well as the hidden; and bless for us our hearing, and our sight, and our hearts, and our spouses, and our children; and turn in mercy towards us. Indeed You are the One who greatly accepts repentance, the Most Merciful. Make us, ones most grateful for Your bounties so we may compete with one another in praising You for these (bounties), and complete these (bounties) upon us.

53.اَللّٰهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُوْلُ بِهٖ بَيْنَنَا وَ بَيْنَ مَعَاصِيَكَ وَ مِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهٖ جَنَّتَكَ وَ مِنَ الْيَقِيْنِ مَا تُهَوِّنُ بِهٖ عَلَيْنَا مَصَائِبَ الدُّنْيَا، اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنَا بِاَسْمَاعِنَا وَ اَبْصَارِنَا وَ قُوَّتِنَا مَا اَحْيَيْتَنَا وَ اجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنَّا وَ اجْعَلْ ثَاْرَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا وَ انْصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا وَلَا تَجْعَلْ مُصِيْبَتَنَا فِيْ دِيْنِنَا وَ لَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا اَكْبَرَ هَمِّنَا وَ لَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَ لَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا مَنْ لَّا يَرْحَمُنَا.

****

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَ اَنْ نَرْجِعَ عَلَى اَعْقَابِنَا اَوْ نُفْتَنَ

*

****

५३. ए अल्लाह! तू हमें अपना ऐसा ख़ौफ़ अता फरमा जो हमारे और तेरी नाफ़र्मानी के दरमियान हाइल हो जाए, ऐसी इताअत की तौफ़ीक़ अता फरमा जो हमें तेरी जन्नत तक पहुँचा दे, ऐसा यक़ीन जिससे हमारी दुनिया की मुसीबतें हम पर आसान हो जाएं। ए अल्लाह! जब तक तू हमें ज़िंदा रखे हमारे कानों, आँखों और क़ुव्वतों से हमें फ़ायदा पहुंचा और हर एक को हमारा वारिस बना, हमारा इंतिक़ाम हमारे ज़ालिमों पर डाल दे, हमारे दुश्मनों के ख़िलाफ हमारी मदद फरमा, हमारे दीन के बारे में हम पर मुसीबत न डाल, दुनिया को हमारे लिए बड़े ग़म की चीज़ न बना, न हमारे इल्म का ज़रिया बना और हम पर उस को न मुसल्लत कर जो हमारे हाल पर रहम न करे।

53. O Allah! Distribute amongst us such awe and fear of Yours that will be a means of intervening between us and Your disobedience, and grant us such obedience of Yours that will enable us to reach Your Paradise, and such conviction which will ease upon us the afflictions of the world, O Allah! As long as You keep us alive, benefit us by means of our hearing, and our sight, and our bodily strengths, and make each one of them our heir, and avenge for us those who wronged us, and help us against our enemies, and do not make trials in our Deen, nor make the world the greatest of our sorrows, nor a (limited) source of our knowledge and do not impose upon us, one who has no mercy for us.

****

ए अल्लाह! हम तेरी पनाह चाहते हैं इस से की अपनी एड़ीयों पर पलट जाऐं या हम फ़ित्ने में डाले जाऐं ।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُ بِكَاَنْ نَرْجِعَ عَلَى اَعْقَابِنَا اَوْ نُفْتَنَ

"O Allah We seek refuge in you from turning away (from your obedience)

or from being put to trial".

****

हवालाजात References

हम्द-ओ-सना

१.(सही मुस्लिम, किताब-अज़्-ज़िक्र व दुआ बाब फ़ज़ल अत्तह्लील व तस्बीह:६८४६)
२.(सही मुस्लिम, किताब-अज़्-ज़िक्र व दुआ, बाब अत्तस्बीह अव्वल-उन-नहार व इंदल नौम:६९१३)
३).सुनन अबी दाऊद, किताब अल-वित्र, बाब अद-दुआ:१४९५) सही
४.(सही इब्न हिबान, किताब-अल-राक़ईक़, बाब अद-इयाह, ज: ३, हदीस:८९१) सही

दुरूद शरीफ़ﷺ

१. (सुनन अन-निसाई, किताब अस-सहव, बाब नूअ आखिर:१२९३) हसन
२. (सुनन अबी दाऊद, किताब--उस-सलाह बाब अस्सलातु-अलन-नबी बाद अत-तशहहुद:९८१) सही
३. (सही बुखारी, किताब-उद्-दावात,बाब अस्सलातु-अलन-नबीﷺ:६३५८)
४. (सही बुख़ारी, किताबुल अहादीस अल-अमबिया, बाब:३३७०)

क़ुरआनी दुआऐं

رَبِّ

१.(طٰه:२८-२५)
२.(طٰه: ११४)
३.(الاسراء:२४)
४.(القصص:२४)
५.(الانبياء:८९)
६.(المؤمنون:११८)
७.(التحريم:११)
८.(الاسراء:८०)
९.(المؤمنون:२९)
१०.(العنكبوت:३०)
११.(المؤمنون:९७-९८)
१२.(هود:४७)
१३.(ابراهيم:४०-४१)
१४.(اشعراء:८३-८५,८७)
१५.(النمل:१९)
१६.(الاحقاف:१५)

رَبَّنَا

१.(البقرة:२०१)
२.(الكهف:१०)
३.(الممتحنه:४)
४.(الِ عمران:५३)
५.(التحريم:८)
६.(الفرقان:७४)
७.(الاعراف:१२६)
८.(البقرة:२५०)
९.(يؤنس:८५-८६)
१०.(الِ عمران:८)
११.(الِ عمران :१६)
१२.(الاعراف:२३)
१३.(الِ عمران:१४७)
१४.(الحشر:१०)
१५.(الِ عمران:१९३)
१६.(الِ عمران:१९४)
१७.(الفرقان:६५-६६)
१८.(الِ عمران :१९१-१९२)
१९.(المؤمن:७-८)
२०.(البقرة:२८६)

मुतफर्रिक़ दुआएं

१.(البقرة:६७)
२.(يوسف:८६)
३.(الانبياء:८३)
४.(الانبياء :८७)
५.(التوبة:१२९)
६.(يوسف:१०१)
७.(الِ عمران:२६-२७)

१.अपने लिए दुआ मांगने में आसानी के लिए فَقِّهْهُको فَقِّهْنِيसे बदल दिया गया है|
(सही बुख़ारी किताब अलवूज़ू, बाब वूज़ू-अल-मा इंदल ख़ला:१४३)
२.(मुसनद अहमद, ज:४० स:२६०, हदीस २४२१५) सही
३.(जामेअ तिरमिज़ी, किताब-उद्-दावात, {बाब फ़ी फ़ज़ल सुआल अल आफ़ीयत वल मुआफ़ात}:३५१३) सही
४.(जामेअ तिरमिज़ी, किताब-उद्-दावात, बाब क़िस्सा तआलीम दुआ { -----اللّهم الهمني رشدي}३४८३ ज़ईफ़
५.(जामेअ तिरमिज़ी, किताब-उद्-दावात, बाब {दुआ: -----يا مقلب القلوب}३५२२ सही
६.(सही मुस्लिम, किताबुल क़द्र, बाब तसरीफ़ अल्लाह-अल-क़ुलूब कैफ़ शाअ: ६७५०)
७.(सही मुस्लिम, किताब-अज़्-ज़िक्र व दुआ बाब फ़िल अद-इयाह: ६९०४)
८.(सही मुस्लिम, किताब-अज़्-ज़िक्र व दुआ व तौबा वल इस्तिग़फ़ार, बाब फ़िल अद-इयाह :६९०६)
९.(सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब, बाब मा यक़ूल اذا اصبح:५०९०) हसन
१०.(सुनन इब्न माजह किताब ईक़ाम-उस-सलाह, बाब मा यक़ाल बाद अत-तसलीम :९२५)सही
११.(सुनन इब्न माजह किताब-उद्-दुआ, बाब दुआ रसूल अल्लाह ﷺ:३८३३) सही
१२.(सुनन अलकुबरा अन- निसाई बाब मा यक़ूल ईज़ा तौज़ा:९८२८) सही
१३.(सही व ज़इफ़ अल जामेअ सगीर, ज:१,स:२७०,हदीस :१२५५)) हसन
१४.(जामेअ तिरमिज़ी, किताब-उद्-दावात, अहादीस शत्ता मिन अबवाब अद्-दावात:३५६३) हसन
१५.(मुस्तदरक अला अस-सहिहैन अल-हाकिम, किताब-उद्-दुआ, ज:१,स:५१०) सही
१६. सही इब्न हिबान, किताब-अल-राक़ईक़, बाब अद-इयाह, ज:३,हदीस:९७४) सही
१७.(सही मुस्लिम, किताब--उस-सलाह,बाब मा यूक़ाल फ़ी रुकू व सुजूद:१०८४)
१८.(जामेअ तिरमिज़ी, किताब-उद्-दावात,बाब दुआام سلمة:३५९१)सही
१९.(सुनन इब्न माजह किताबु- उज़-ज़ुहद, बाब मजालि-तुल-फ़ुक़राअ:४१२६) सही
२०.(सुनन अन- निसाई किताबुल इस्तीआज़ाह बाब अल इस्तीआज़ाह मिन ग़लबत-अद-दैन:५४७७)हसन
२१.(सही व ज़इफ़ अल जामेअ सगीर,ज:१,स:६९४,हदीस :३७३१)सही
२२.(सुन्न अबी दाऊद, किताबुल वितर, बाब अल- इस्तीआज़ाह:१५४४)सही
२३(मजमअ-अज़्ज़वाइद व मन्बअ-अल-फ़वाइद,ज:१०,स:२०६)सही
२४.(सही बुख़ारी, किताब-उद्-दावात, बाब अत्तआवुज़ मिन जहदलबला:६३४७)
२५.(सही बुख़ारी, किताब-उद्-दावात, बाब अल- इस्तीआज़ाह मिनल जुबन वल कसल:६३६९)
२६.(सही मुस्लिम, किताब-अल-राक़ईक़, बाब अक्सर अहल-अल-जन्नह अल- फ़ुक़राअ व अक्सर अह्ल-अन-नार अन-निसा व बयान- अल- फित्ना......६९४३)
२७.(सही मुस्लिम, किताब-अज़्-ज़िक्र व दुआ बाब फ़िल अद-इयाह:६९०६)
२८. जामेअ तिरमिज़ी, किताब-अत-तफ़सीर, बाब: मिन सुरह अल -मोमीनून:३१७३) ज़ईफ़
२९.(अल-मोअजम अल-कबीर अत-तबरानी, जुज़:१७, हदीस:८१०) सही

३०.(सही बुख़ारी, किताब-उद्-दावात, बाब क़ौल अन-नबी ﷺ اللهم اغفر لي ما قدمت و ما اخرت:६३९९)

३१.(किताब-उद्-दावात अल-कबीर, ज१, स:१६८, हदीस :२२७)जईफ़

३२,३३,३४.(सुनन इब्न माजह, किताब-उद्-दुआ, बाब जवामेअ मिन-अद्-दुआ:३८४६)सही

३५.(सही बुख़ारी, किताब-उद्-दावात, बाब तावुज़ मिन बुख़ल:६३७०)

३६.(सही मुस्लिम, किताब--उस-सलाह, बाब मा यूक़ाल फ़ी रुकू व सुजूद:१०९०)

३७.(सही मुस्लिम, किताब--उस-सलाह अल-मुसाफ़िरीन, बाब सलात-अन-नबी व दुआ बिल-लैल:१८१२)

३८.(जामेअ तिरमिज़ी, किताब-उद्-दावात, अन रसूलﷺ,बाब मा-जा-फी उक़द अत-तसबीह बिल यद:३४९१)ज़ईफ़

३९.(सुनन निसाई किताब-अल-इस्तीआज़ाह बाब अल-इस्तीआज़ाह मिन-अत-तरदी वल हदम:५५३३)सही

४०.(सही मुस्लिम, किताब-अज़्-ज़िक्र व दुआ बाब फ़िल अद-इयाह:६९०३)

४१.(हिल्यतुल औलिया, बाब अब्दुल्लाह अल-उमरी, ज :३) ज़ईफ़

४२.(मुसनद अहमद, ज :३६, स ४२२, हदीस:२२१०९) सही

४३. (सही मुस्लिम किताब सलातुल मुसाफ़िरीन सलात- अन-नबी व दुआयः बिल-लैल: १८११

४४. (अल-मुस्तद्रक अला अस-सहिहैन अल हाकिम ज:१ स:५३०) सही

४५. (सिलसिल तुल अहादीस आस-सहिह, ज: ७, स:३७७,हदीस: ३१३७) सही

४६. (मुसनद अहमद, ज:६, स: २४६, हदीस: ३७१२) सही

४७. (सही बुख़ारी किताब-उद्-दावात बाब ईज़ा इन्तबह मीं अल-लैल: ६३१६) आख़री दो अल्फ़ाज़ दूसरी रिवायत से हैं

४८. (जामेअ अत-तिरमिज़ी किताब-उद्-दावात, बाब {رَبِّ اَعِنِّیْ وَ لَا تُعِنْ عَلَیَّ }: ३५५१)

४९. (सुनन इब्न मा जह, किताब अद-दुआ, बाब दुआ रसूल अल्लाह: ३८३१) सही

५०. (सुनन अन-निसाई किताब अस-सहव बाब नूअ आख़िर: १३०६) सही

५१. (अल-मुस्तद्रक अला अस-सहिहैन अल हाकिम ज: १ स: ५२०) सही

५२. (अल-मुस्तद्रक अला अस-सहिहैन अल हाकिम ज: १ स: २६५) सही

५३. (अल-कलिम अत-तय्यिब, स: १६७, हदीस: २२६) हसन

अलहुदा प्रकाशित मतबूआत (वस्तुऐं)

पुस्तकें

- क़ुरआन मजीद (उर्दु शब्दार्थ)
- मुन्तखिब आयात-ए-क़ुरआनी
- मुन्तखिब सूरतें और आयात
- तालीमुल क़ुरआन क़िरआत वल किताब
- क़ुरआन करीम और उसके चन्द मुबाहिस
- हदीस-ए- रसूलﷺ एक तआरूफ़ एक तजज़िया
- हिफ़ाज़त-ए-हदीस क्यूँ और कैसे
- क़ाल रसूलﷺ
- रब्बी ज़िद्नी इल्मा
- सदक़ा-व-खैरात
- हुस्न-ए-अख़लाक़
- फ़ित्नों के दौर में
- मुहम्मद रसूलﷺ मामूलात और मआमलात
- अरबी गिरामर
- इस्लमी अक़ाइद
- फिक़्ह-ए-इस्लामी एक त आरूफ़ एक तजज़िया
- मेरा जिना मेरा मरना
- आख़री सफ़र की तैयारी
- बेवगी का सफ़र
- अबू बक्र अस-सिद्दीक़رضی اللہ عنہ
- वालिदैन हमारी जन्नत

पमफ़लेटस/ पर्चे

- नमाज़ बाजमाअत का तरीका
- नमाज़-ए-फज्र के लिए कैसे बेदार हों
- जुमा का दिन मुबारक दिन
- नमाज़ -ए-इस्तिस्क़ा
- दूरूद-ओ-सलाम ....(अस्स्लातु-अल-अननबीﷺ)
- गुस्ल-ए-मय्यत और कफ़न पहनाना
- इज़हारे मुहब्बत कैसे?
- इन हालात में क्या करें?

दुआऐं

- क़ुरआनी और मस्नून दुआऐं
- ईय्या-क-नस्ताईन
- नबी अकरम (ﷺ) के सुबह शाम
- नमाज़ के बाद के मस्नून अज़्कार
- नमाज़-ए-तहज्जुद के लिए दुआ-ए-इस्तिफ़ताह
- हूसूल-ए-इल्म की दुआऐं
- फ़ह्म-ए- क़ुरआन में मददगार दुआऐं
- आयात-ए-शिफ़ा
- मक़्बूल दुआऐं
- सफ़र की दुआऐं
- दुआ-ए-इस्तिख़ारा
- सालेह औलाद के लिए दुआऐं
- नज़र-ए-बद और तकलीफ़ की दुआऐं
- सोते में वेहशत की दुआऐं
- दुश्मन के शर से हिफ़ाज़त की दुआऐं
- मय्यत की बख़्शीश की दुआ

सुनिए और सुनाइए
डॉक्टर फ़रहत हाशमी साहिबा के ऑडियो लेक्चर्ज़

Cassettes/cds/dvds

कोड नंबर	विषय	वॉल्यूम

क़ुरआन मजीद बामुहावरा शब्द-अर्थ और तफ़सीर

FQ1999	फ़हमुल क़ुरआन (उर्दू) **डॉक्टर फ़रहत** हाश्मी	**60**
FQ2000	फ़हमुल क़ुरआन " "	**60**
FQ2002	फ़हमुल क़ुरआन " "	**60**
FQ2003	फ़हमुल क़ुरआन (सिंधी) फ़राह अब्बासी	**31**

क़ुरआन मजीद शब्द-अर्थ ववविर्ण - डॉक्टर फ़रहत हाश्मी

TQ1998	तालीमुल क़ुरआन पारा 1-7(1998-99)	
TQ2002	तालीमुल क़ुरआन पारा 1-30(2002) (MP3)	**422**

अन्य विषयों पर **लेक्चर्ज़** डॉक्टर फरहत **हाश्मी**

F001	नमाज़ क्या सिखाती है?	**1**
F002	शिर्क क्या है?	**2**
F004	हुक़ूक़ुल इबाद	**1**
F009	अदल, अहसान, सिलहरह्मी	**1**
F010	ख़्वाब नूर और उसकी हक़ीक़त	**1**
F011	अल्लाह नूर उस्समावात वल अर्ज़	**1**
F012	अज़्द्वाजी ज़िंदगी में कमियाबी का राज़	**1**
F013	इंसान अल्लाह का मोहताज है	**1**
F014	नमाज़ फ़र्ज़ है	**1**
F015	अल्लाह के ख़ूबसूरत नाम	**2**
F016	अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद ﷺ	**1**
F017	ख़ुशगवार बाहमी ताअल्लुक़ात	**1**
F048	अल्लाह की क़द्र पहचानो	**1**
F049	विरासत कि तक़सीम फ़र्ज़ है	**1**
F050	होमवर्क	**1**

F051	शैतान के हथकंडे	**2**
F052	बच्चों की तरबियत कैसे करें?	**2**
F053	जन्नत का सौदा	**1**
F054	रह्मान के बन्दे	**1**
FO60	मुहब्बतों के इम्तेहान	**1**
F064	दर्वाज़े (जन्नत और जहन्नुम के)	**1**
F065	मसावात मर्द-ओ- ज़न	**1**
F066	दावतें और तोहफ़े	**1**
F067	अब भी ना जागे तो!	**1**
F068	क़ुरआन की किरनें.....मरी के कोहसारों पर	**1**
F072	अस्सलामूअलैकुम	**1**
F073	मज़ाक़ ना उड़ाओ	**1**
F075	फ़ुज़ूल बातें किस लिए????	**1**
F078	पर्दा क्यूँ करें?	**2**
F082	हम दो-राहे पर	**1**
F083	मह्मान नवाज़ी	**1**
F084	फ़ायदामन्द तिजारत	**1**
F087	मुसलमान कैसा होता है?	**1**
F088	सद्क़ा करने से माल कम नहीं होता	**1**
F089	ज़ेह्नी परेशानी से नजात	**1**
F090	वक़्त गुज़रता जाए	**2**
F091	गुस्सा जाने दो	**2**
F092	अल्लाह.....मेरा रब	**1**
F094	शैतान- खुला दुशमन	**1**
F095	गुफ़्तगु का सलीक़ा	**1**
F096	क्या आगे भेजा क्या पीछे छोड़ा?	**1**
F097	हसद की आग	**1**
F098	निकाह मुबारक	**1**
F099	मेह्बूब के लिए मेह्बूब चीज़	**1**
F101	क्या चाहिए दुनिया या आख़िरत?	**2**

Notes